में दास मन का

मैं दास मन का, हूँ मन का पुजारी ।
मेंरा जन्म लेना विफल हो गया ॥

हुआ भाव करलूं, तपस्या कभी जो ॥
करूँ दूर मुझमे, बुराई भरी जो,
कहा मन ने मेरे ,कभी फिर करूँगा,
यहीं दाँव मन का, सफल हो गया ॥
मैं दास मन का....

करूँ आज समभाव ,साधन कभी जो ॥
आलोचना कर, स्व दोषों को खोजूं,
उसी क्षण किसी मित्र का, फ़ोन आया,
कि धर्म क्रिया में, खलल हो गया,
मैं दास मन का...

सुनूं आज पावन, प्रवचन गुरु का ॥
नया ज्ञान सीखूं, चिताऊँ शुरू का ॥
उसी दम जो व्यापार, का मोह जागा,
की सारा नजारा, बदल ही गया,
में दास मन का...

कभी ना की कोशिश, नियंत्रण की मन पे ॥
लगाता है डाके ये, आतम के धन पे,
किया वश में मन को, गुरु राम ने जो,
दर्शन से उनके, 'कपिल' तिर गया ॥
मैं दास मन का...

लेखक

कपिल देवड़ा
रतलाम (म.प्र.)
मो. न. 8989897294

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/7097/title/main-das-man-ka-hun-man-ka-pujari

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |